

प्रनमामित्रदोयुजयवाचुमी ॥ १ ॥ वागम्यदुं श्री ॥ दंदिनीसुववलवी ॥ सुमणिः कस्य ॥
उपहृतादासं हृत्कलाया ॥ २ ॥ हंजंकाहामलः ॥ जमनीवाहियाल ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हालः सर्वनागं ॥ अगताययः ॥ सर्वधर्मिः ॥ नेनामादक्षमं ॥ सुवमम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अनदिना ॥ १ ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कनर्वमिनाः ॥ समुद्रदकाया ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वहृत् ॥ वाहृत् ॥ वाहृत् ॥ वाहृत् ॥ वाहृत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
समुद्रदकाया ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ सुहृत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

2843

ॐ नमः ॥

ॐ नमः ॥

गनः निवावर्धुः वाचुविशः ॥ सर्वसत्त्वमहाचिह्नः सर्वप्रकिर्तनीमयः समस्त
दक्षिणगन्धर्वसमंस्तुतसावधि ॥ ॥ सर्वप्रसन्नसर्वगतः मनाहनः नर्थपदः सर्वजाना
नाथपहृष्टसदविकल्पः मनाहनकचनः दाकिनीहृत्काजिनाः रुचकं पवित्रकः
जिनगुणाः ज्ञानादायः आरुपदः तस्यारुणकृपाः दुःखहृत्समस्तानिर्द्वयसमस्त
व्यागनादिः कानाद्वलाधियावायाः सामुनित्रकनकायाः घनकपीथिहायिजळ्वजयिः क
चनकायाः नमः ॥ १ ॥ मय्यजकं द्रवजयिदिदिमानाहिनजळ्व ॥ २ ॥ त
रुणाजनगालः मयनापिअजनयाथीः हलकालिजनपुनयाभूः ॥ द्रवजवनपुनया

ॐ नमः ॥

यि ॥ ३ ॥ चउहमकस्तुवीशीलाः कप्यनलाशनयाथीः मलयजयिधनसालिजलः तहि
द्रव्याजनयाभूः ॥ ४ ॥ प्रखनखनकनेकः सद्वासुद्धनमूनः निनसुहन्नगचद्यवधूः
हिरसनावर्धुमूनयि ॥ ५ ॥ आगकः नानमूनमाथः सर्ववैधविवूधमधुनाः विस्वमा
यानिष्ठुदनीः वज्रमधुतवज्रजोगानीः कानंदलासिननोचन ॥ ६ ॥ नमामीवाचुनासिदि
आगिनिः गद्यमंष्टुनारत्रस्रस्रधिसर्वसिधियानिः विस्वमायाविवदिना ॥ ७ ॥ आदितमंष्टु
ननजसमनः ॥ सुदियमावाहृत्तनारचकिर्कधुनः कधुनाचकमखनवित्तरिना ॥ ८
कवतिरपपनः मानचुदनीः मकूतकसदिगंवदार्द्रमानः स्वत्वाकमधुनाः थानजिक्कारय

卷之八

कथा ॥ ४ ॥ नृपदेवी प्रकृन्नकाः सयुवविस्ववियायीनारुशुचनन सीलधलियाः त्रुडा
ध्रुवकर्णुपागमडयिया ॥ १ ॥ वागर्कलेवि ॥ गगर्जन उधनहाथधनीयाः कमनकृपि
सत्रुधवाभीरदमत्रुकवलीकृतनः ॥ श्रीशुधनवामखल्लंगकयानत्रुधना ॥ ५ ॥ श्रीनीस
तनायावाचुवितुक्तगगुविनारमानयलचापयिया नमायाः साखलजनुमृदासीनी
ना ॥ १ ॥ पाठवक्रमृदववामहाथनिःधनिया उन्नवशीनमाना ॥ निवलितलाहिन
कर्णुकातवेः चउमुखत्रुजीवीकनालत्रुधना ॥ २ ॥ श्रावियपयालेवडासापयिपा
नः कानिनाजीवीतमृदा ॥ विस्वकृनीसत्रुधचंद्रजगर्कः व्याघचनमखदमृदा ३ ॥

विद्यया

सुनिर्वाणविषयस्वनायकः प्रीतिचक्रमहावीरवाचारकचक्रसंगमलसविनविनस
 नः कृत्यासया यसा नम्रधना ६०६ ॥ १ ॥ आगमवितः विषयविषयविनः प्रववर्तजालः
 जावयीचंद्राविः नाशिकमलरदहयिजिनविवृसष्टिः सत्रयिष्ठुवक्रवनिः प्रीतिभूला
 विसः ६०६ मसयनः ॥ ५ ॥ नमिमंरुधार्सः कानचक्रहः वज्रसंववविषयवर्पः पयीपद
 मसंजालः शरुवनिष्ठया सहजज्ञानदमयः सुननुर्प ॥ २ ॥ वज्रपथकसर्वकृमन
 नतनः नामधर्मीगीतीभूषणार्थान्नरजगतद्रस्यनाशनः वाधिरुवदामकः शागधमधि
 धलवेहिया ॥ ३ ॥ गुनवाधदधद्वीयाः नृदपवनकुचियाः मनिमूर्यचंद्रः ७०६ आदिध

विरद्वसमासविनासनिदवी॥ ॥ वरुनयन नानी वृत्तमाया रस गकलनि
 कपालनिशायन॥ ॥ वाद्यचलमवस्यपत्याधरस्यवलंदादलहावाकाना
 ॥ ॥ ववनसलनली उर्गता वृक्षमात्ररुनयिभ्रमाद्यवङ्गीता ॥ ॥
 नागमात्रव॥ वज्रनिधालिया चद्युविधतालिशसिधुमीव्याधिनिर्गवृकवृ
 नाकिनि॥ ॥ नमामिष्टीयागव नृहानेष्टविया २ निमित्तनेमर्तु देवीजी
 त्ववनपयिष्ट॥ ॥ पूर्वउर्तवपच्चिमदच्चिनदिगदवीरदाकिनिदिपी

विरद्वसमासविनासनिदवी॥

निचवृसिंकयाऊनि॥ ॥ चनुयदिगंनुक्ररुलननुक्रादवीरतिनितिति
 नाचंतीतीतवनऊननि॥ ॥ हलिहलवृक्रांरुन्द्रेत्रुगु नगहारसादहीया
 गानिसमवर्षलाव॥ ॥ ७ ॥ नागहंवि॥ नमामिश्किनधनुकवंतकःचद्रुन
 मुरुनिआयिगीनार्यचहानयचं धनुस्रूपाःवृद्धधनमत्रानयस्रवा॥ ॥ ॥ नना
 कं कः नना कं॥ जगतर्षसावउधविया मना हनः नमः मुरुपंचकिनयस्रवा॥ पंच
 ज्ञानपंचधनुस्रूपाःवृद्धधनमत्रानयस्रवा॥ ॥ नमामिश्कीहानिपुत्रव

नमामिश्कीहानिपुत्रव

बलिधि सिधिवन दायिनि रद्वित हवन सवपापपयः कवन दान पुन्य हमाक्ष
पुष्टं ॥ नमामि रधर्म धनुवा गिष्ठनः वा दहा दवा नपत्रिर्मदिना रधा दहा

नोवन नना मूनं कायाः सर्वदवपत्रिर्मदिना ॥ नमामि रवा गिष्ठर्मधु नपम

गिष्टिनि नवा सितार सत्व विमा हित द्रव वि नना नः पुष्टा मा मिश्रिन च फल्य नुमा ॥

१ नाग वसंत ॥ मधु विपूनी पूयाः दूयिनी कुलालार सकव दव गन वदिन पाद ॥ ५ ॥

मेजी आदि वद्वष्टा मं कृ कृ मा या र नं नृ पि वं क्ष वि पम नृ नं हवा ॥ ॥ कृ कृ मत्र वि

तदिव मा र संन्य गं मित्रः कवन वी हवा ॥

॥ विरय विरय म कृ नपा नगम

न सत्त र विष्ठ विषा पितः णी गुत्र स्वयत् ॥

॥ सत गुत्र पय मा दि वि दू ज्ञा या धर

गा वनित वगी तमन व कृ मिष्ठ ॥ ४ ॥

॥ १ नाग वसंत ॥ नी दस्त कमल वन कृ म

मयं सयगः मधु कल ह वृ वं नीना र णी वी नृ पा कृ ण र्ग मूख दविः मयनि मायः

यं वा पीता ॥ ५ ॥ नमामि ने या मा त्रि रदन माः वचु या दवी णी मृग थलि र

सय वष्टा या ह व वं दित सय गः नृ नं गलि द्वि सि द्वि वन प्रसादा ॥ ॥ न दुन व

म। वचन न वः अनमक सुमपाविज्ञा न वने न नितुं गंगा ह म वः सति लः
अनमगतीर्थ सुवक्तु वल ॥ ॥ अमलैल वचन पागी निः अनमद वा शु व
क्षु पाल २ अम महालय दुलित निल वा शु धिः अनम विपु दिना सनि ॥
विष्णु विष्णु पित न त्रु क्षि द वीः अख यनिल अन क्षा ति मय २ अलि म न सख रु
व दायि नि द वीः अनम अनम नु क्ष पयि स व क्षा ॥ ७ ॥ ६०३ ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अख सन रूपाय किं ३३ ल्यय त्रिय सा य दी न व रूपा सा य व द्य रू ॥ न त्याग सद सा
॥ अं त वि ज न या या द य या ना य सा ॥ ६०४ ॥ सत्यार्थ विप्र ॥ अमि ॥ विरुं य विन न
॥ अ वि रू यं ॥ अ म क व रू न व च स द स व रू ॥ ॥ न म हि मं शु या सी
॥ अ क ॥ ॥ संग रू नः संग रू नी ताः अ रू गो वाः अ रू या यि रू वाः स रू ही त रू वाः
॥ अ पि ना वाः संगी ना वाः अ रू संगी ना वाः अ रू संगी ना वाः
॥ अ म हा मू द्या न रू प रू य नि रू य यि त रू वा ॥



सुप्रतिमं शुभाः शिला ॥ कृताज्ञानमीदं ननु प्रित्तवन्नन प्राप्तिना मिश्रना ॥ १ ॥
चक्रं वृत्तिना नृपान विषयानाज्ञानिनः कदाप्य ॥ २ ॥ नृपाज्ञानचूर्ध्वमेता
मर्कतयाः स मधुलयायि मर ॥ ३ ॥ विष्णुमंथुनचक्रमाः कलयन्ते चेत
किमस्मा मृषि ॥ ४ ॥ हा तत्र नृपा शिला ॥ चन्द्रालिकवलीलया जिज्ञप
या इल्ललिता विष्णुत्तविष्णुत्तलिमहाशुखं दिवचलः लीनसा वा ल्म दयः नृ
हाजाग्रः मनायि नृवृत्तिपदः प्राफापिधल्लययाः दामदाग्रवृदयद्वयचस

हजायनन्यायचन्दामह ॥ ० ॥ निरुत्तवया शिला ॥ मेलेमंथुनविष्णव
जः कलितः पिता र्द्धकृष्णननः नेवात्मा पवित्रकाः माहमृदिनं श्रुत्वा शिवकि
पुत्रः मृत्युं कृष्णगविलदेवतनया कान्धु पुष्टवालये सन् मधुनचक्रना
यः महहवजनाथ ॥ ० ॥

१ अक्षिव न कृन्ः या न गृहः
का पाः नदि नमस्काः विष्णुसन्ः
अनिनः
न कृन्
नमस्
गो वक्र
गो वक्र

१ सानिकृन्
नदि नमस्का
विष्णुसन्
अनिन
न कृन्
नमस्
गो वक्रः
अनपि वक्राक्षस
नमस्
वासा दहिः स गार्ध
सा गार्ध
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः

अक्षिकृन्
नदि नमस्का
अनिन
अनिनः निनि सायं
न कृन्
नमस्
गो वक्र
कसि नवज्ञानः आक्षि यथाः
का ना ॐः सा ज्ञानः सा नमः

१ अक्षिकृन्
नदि नमस्का
विष्णुसन्
अनिन
न कृन्
नमस्
गो वक्रः
अनपि वक्राक्षस
नमस्
वासा दहिः स गार्ध
सा गार्ध
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः
वक्र नमः

अक्षिकृन्
नदि नमस्का
अनिन
अनिनः निनि सायं
न कृन्
नमस्
गो वक्र
कसि नवज्ञानः आक्षि यथाः
का ना ॐः सा ज्ञानः सा नमः

शक्तिरद्वयानलः
को नाहं
सर्वबोधः
कीकाम्यवशात्मानकातिशयम्
शक्तिनिः शक्तिशक्त्याम्

१ का नाष्टः सर्ववृधः थुनरा सः हाता रुलंः आदिमात्रका गित मात्रकाः थुनि प्र
 द्वाकृत्तुयातः ॥ ॥ थनरा ना कृत्तु गच्छु सः नद्युन मत्कावः गित वीध सला नूहः ॥ ० ॥
 १ वागर्ग धा नष्टे वविः रुवरा यमकृत किलटि मनिल छुवः चवन नक्षर्ग २ ॥ साहिय
 कज सत्वः पनम्य छलः पनम पदं ॥ २ ॥ गध सनि वक्षु पिथ कर्त्य कृट दह धवं ॥ ३ ॥
 चवित्त न रुवक्षुः चावित्तु या कृट क म यक्षर्ग ॥ ४ ॥ १ थन गच्छु नः पाठ पूजाः थन न
 तं ५ ॥ १ वागर्ग धा नष्टे वविः न प्रमहि मं धु य म नूठा मूया रजन धन गा लन उदु क विम्व चं द्या ३

१ वागर्ग धा नष्टे वविः न प्रमहि मं धु य म नूठा मूया रजन धन गा लन उदु क विम्व चं द्या ३

॥ ५ ॥ पखुले नूनु मियः लायन गयन्य २ कूल पविहा सयिः जिन गुन लयन ॥ २ ॥
 कथ धालि नूद्रियाः विखय यका २ हा मूदुत वंग जिः न प्रकृ नूनु यका ॥ ३ ॥ १ वन दूय
 रुदीयाः दुध वि वसीया २ काल यिव र्जन लः दह्यी याह ॥ ४ ॥ छु गत रुदी ला वी याः न
 सोल्ल साध २ सुवत वर्जन नयिः अष्टि र्वा लायन र्ग ॥ ५ ॥ १ थन मध्य म नूः निलानाः
 तिः ग्वकृ उरुः खत गा गिनि ॥ ० ॥ १ वाग वलितः मरु पं कृ पात समया चालि र्वध न २
 दहादि गदहा वयः भाला धिया लः समया नूदु रुल तिहा ॥ ५ ॥ विव वी लं व वयि
 ध नः मं धु य मा रुनी वी ध्व रुलिय २ नूदु का या व वि दान द वीः यान प विल वि ध्व

१ वागर्ग धा नष्टे वविः न प्रमहि मं धु य म नूठा मूया रजन धन गा लन उदु क विम्व चं द्या ३

१ वागर्ग धा नष्टे वविः न प्रमहि मं धु य म नूठा मूया रजन धन गा लन उदु क विम्व चं द्या ३

निवालय ॥ १ ॥ सदिसाक्षि सर्वलमा कालचक्रं ॥ हवजकायावरुलीया २ याह्यागि
 निमलीया ॥ विमूजन ॥ शीमयानचुरुवति ॥ हा ॥ ३ ॥ शीहनाउवाक्रियालः ७ म
 प्रषादः ॥ अशुगिनिदानपूनरुजानधनपूनाः ॥ अवधुवययियाः ॥ कर्तुयाचननन
 निहा ॥ ४ ॥ ॥ नागह्वयवि ॥ उम्राईरुट्टुनखाहाः ॥ मकुउवावहाल २ पूजापूक
 कपूकलाव ॥ तत्वस्वरूपपनिनाव ॥ ५ ॥ खखरखाहिरवनिपूलन ॥ यद्य ॥ द्यानय २
 विघ्नहल २ पंक्षामृलयालः १ ॥ पंक्षालिलपंक्षानसर्वनिना ॥ २ ॥ सर्वजस

माधुंक्षितप्रतपीसाचाः ॥ साजपुमावा २ ॥ कदाकिनिद्र्यामूससमजानः ॥ वृंदुव
 गृहः ॥ ३ ॥ दानपतिलसर्वकार्यत्वमा ॥ सर्वजुखसंप्रतिशासुन २ यथवन
 थव ॥ लज्जथपीवर्थजिघृथमात्रिकर्मथन ॥ ४ ॥ शीमयावदुदयानपतिलः ॥ सर्व
 शिद्विसंप्रदक्षील २ ॥ शीशिवतथागतवयनः ॥ सर्वशिद्विसंप्रदक्षीधिन ॥ ५ ॥
 १ ॥ यनननिनधनजिउ ॥ ० ॥ नागवलिनः ॥ नूरुवनतथानावकालेसलवाः ॥ वन
 नूपचानुनविचित्रकलेश २ ॥ उम्राईकाववजामृतमूदकः ॥ सफसाधितं ॥ नामासुन

